

वर्ग भेद पुं. (तत्.) 1. दो वर्गों के सदस्यों के बीच का भेद, व्यक्तियों या वस्तुओं के बीच का अंतर 2. वर्गों के बीच भेद-भाव की भावना।

वर्गमूल पुं. (तत्.) दी हुई संख्या के भीतर की वह संख्या, जिसको उसी से गुणा करने पर दी हुई संख्या प्राप्त होती है, (जैसे 25 का वर्ग मूल 5 है) टि. प्रत्येक संख्या का वर्गमूल प्राकृतिक संख्या में संभव नहीं है।

वर्गयुद्ध पुं. (तत्.) 1. दो वर्गों के बीच का संघर्ष, दो समूहों के बीच का विरोध 2. हिंसक टकराव।

वर्गलाना स.क्रि. (देश.) अपनी सही या गलत विचारधारा के अंदर लाना, चालाकी से अपने मत के प्रति कायल करना, अपनी बात मनवाना।

वर्गविचारधारा स्त्री. (तत्.) वर्ग विशेष की धारणाएँ, जाति विशेष की अभिवृत्तियाँ, समूह विशेष की मनोवृत्तियाँ।

वर्गसंघर्ष पुं. (तत्.) दे. वर्गविचार धारा।

वर्ग समाज पुं. (तत्.) आर्थिक अथवा सामाजिक स्तर भेद के आधार पर वर्गीकृत समाज, विभिन्न वर्गों में विभक्त समाज।

वर्गसमूह पुं. (तत्.) अपने वर्ग के सदस्यों के प्रति आग्रहपूर्ण झुकाव, अपने जाति वर्ग के सदस्यों को लाभ पहुँचाने की प्रवृत्ति।

वर्गसूचक पुं. (तत्.) ऐसा शब्द या चिह्न जो किसी वर्ग या जाति की ओर इशारा करता हो।

वर्गहीन समाज पुं. (तत्.) समान स्तर का समाज, ऐसा समाज जिस में वर्ग भेद न हो, समानता पर आधारित समाज।

वर्गांकित पुं. (तत्.) समान आकार के छोटे-छोटे वर्गों से अंकित कागज, ग्राफ पेपर।

वर्गांत्य पुं. (तत्.) देवनागरी वर्णमाला में स्पर्श अथवा स्पर्श संघर्षी वर्णों का अंतिम वर्ण जैसे- ड, ञ, ण, न और म।

वर्गिकी स्त्री. (तत्.) वनस्पतियों अथवा प्राणियों को लक्षणों के आधार पर व्यवस्थित करने का विज्ञान।

वर्गीकरण पुं. (तत्.) जड़ तथा चेतन पदार्थ को लक्षणों के आधार पर विभक्त करने का कार्य।

वर्गीकृत वि. (तत्.) लक्षणों अथवा गुणों के आधार पर विभक्त।

वर्गीय वि. (तत्.) किसी वर्ग विशेष में परिगणित, किसी समूह से जुड़ा हुआ, विशेष वर्ग के लक्षणों वाला।

वर्गोत्तम वि. (तत्.) अपने जाति समूह में सब से उत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम पुं. (तत्.) 1. देवनागरी वर्णमाला के पाँचों अनुनासिक वर्ण दे. वर्गांत्य।

वर्चस पुं. (तत्.) 1. शक्ति, बल, वीर्य 2. तेज, दीप्ति, प्रज्वलन।

वर्चस्व पुं. (तत्.) 1. प्रभाव, प्रबलता, प्रधानता 2. चमक, कांति, दीप्ति, तेज।

वर्चस्वी वि. (तत्.) 1. प्रभावी, प्रबल, मुख्य 2. चमकीला, कांतिमान, देदीप्यमान, तेजस्वी, तेजपूर्ण।

वर्जक वि. (तत्.) 1. त्याग देने वाला, छोड़ देने वाला 2. न मानने वाला, मना करने वाला 3. निषेध करने वाला।

वर्जन पुं. (तत्.) 1. मनाही, मना 2. त्याग, छोड़ने का कार्य।

वर्जना स्त्री. (तत्.) 1. मनाही 2. निषेध, उपयोग के लिए अस्वीकृत, वर्जन करना, मना करना, निषेध करना।

वर्जनाहीन वि. (तत्.) जिस का वर्जन न हो, जिसकी मनाही न हो, जो निषेध न हो।

वर्जनीय वि. (तत्.) 1. वर्जन के योग्य, निषेधात्मक 2. जो ग्राह्य न हो 3. त्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य 4. अनुचित, धिक्कारने योग्य।

वर्जयिता स्त्री. (तत्.) वस्तु अथवा स्थिति को त्यागने की दृष्टि से उसके अवगुणों की मात्रा।

वर्जित वि. (तत्.) 1. मना किया हुआ, निषेध किया हुआ 2. त्याग किया हुआ, छोड़ा गया 3. जहाँ प्रवेश संभव न हो।

वर्जिश स्त्री. (फा.) 1. व्यायाम, शारीरिक अभ्यास, कसरत 2. परिश्रम, मेहनत, वरजिश।